The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 6 | June 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF (2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय राजनीति पर कुलदीप नैयर की पत्रकारिता: एक अध्ययन

डॉ. संजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, दुर्ग, छ.ग.490020
email: ssanjeevmzp@gmail.com
सिमरन चंद्राकर
शोधार्थी, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, email: simranchandrakar6@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.21444581

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 12-05-2026

Accepted: 29-06-2026

Published: 15-07-2026

Keywords:

भारत, राजनीति, कुलदीप, पत्रकारिता, नैतिकता, निडर

ABSTRACT

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय पत्रकारिता ने एक नए युग में प्रवेश किया। यह वह काल था जब पत्रकारिता को पहली बार औपनिवेशिक शासन के प्रतिबंधों से मुक्ति मिली थी और उसने स्वतंत्र लोकतांत्रिक भारत के निर्माण में अपनी सक्रिय रेखा को आज़ादी के साथ खींचना आरंभ कर दिया था। संविधान के अनुच्छेद 19(1) (a) ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार मिला। यह अधिकार भारतीय पत्रकारिता की आत्मा बना और प्रेस ने इसे जनता की आवाज़ के रूप में ग्रहण किया। स्वतंत्रता के बाद पत्रकारिता केवल राजनीतिक आंदोलन का औजार नहीं रही, बल्कि यह लोकतंत्र की एक सशक्त बुनियाद के तौर पर आरंभ हुई। उसका कार्य अब शासन की नीतियों की समीक्षा करना, समाज में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के साथ –साथ नागरिक अधिकारों की रक्षा करना भी था। आजाद भारत में ऐसे बहुत से ऐसे पत्रकार हुए जिन्होंने देश के नागरिकों के हित और रक्षा के लिए सरकार तथा सत्ता से सीधे टकराने से कभी नहीं हिचकिचाए. उन्ही महान सपूतों में एक नाम कुलदीप नैयर का भी है जिसे पत्रकारता जगत में बहुत ही आदर से लिया जाता है. कुलदीप जी ने अपने पत्रकारिता से एक नई इबारत लिखि जो आज भी भारत की पत्रकारिता

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

में बड़े ही आदर से याद किया जाता है. यही वजह है कि उनके नाम से भी पत्रकारिता जगत में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित किया जाता है.

प्रस्तावना-1947 के बाद भारतीय पत्रकारिता को नए प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा था। औपनिवेशिक शासन के अंत के साथ ही प्रेस को अब अपनी भूमिका पुनर्परिभाषित करनी थी। स्वतंत्र भारत में पत्रकारिता को न तो औपनिवेशिक सेंसरशिप का भय था और न ही ब्रिटिश शासन की प्रताड़ना का, परंतु अब चुनौती थी लोकतंत्र में अपनी विश्वसनीयता और नैतिकता को बनाए रखने की। स्वतंत्र भारत में प्रारंभिक वर्षों में आज़ादी के संघर्ष के साथी समाचार पत्रों ने आज़ाद भारत के आरंभ में अपनी नैतिकता बनाए रखी जिनमे *द हिंदू, टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, अमृत बाज़ार पत्रिका* जैसे अखबारों ने राष्ट्रीय मुद्दों पर विकास के बहस को प्रोत्साहित किया[2]। इन पत्रों ने संविधान सभा की कार्यवाहियों, देश की नीतिगत बहसों और स्वतंत्र भारत की सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को जनता तक पहुँचाने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

आज़ाद भारत के इस स्वर्णिम इतिहास में एक ऐसे पत्रकार ने जन्म लिया जिसने भारत के विभाजन काल से आरंभ मंगल पर पहुँचने तक का सफ़र अपने कलम से तय किया . प्रखर पत्रकार, लेखक, समाजसेवी, मानवाधिकार कार्यकर्त्ता, विदेश सचिव और सूचना जगत के महान अध्येता कुलदीप नैयर उन्ही में से एक है .इनका जन्म आज के पाकिस्तान के तत्कालीन सियालकोट में एक समृद्ध परिवार में हुआ था. अच्छे परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी कुलदीप जी को विभाजन के मुश्किलों का दंस झेलना पड़ा.उन्हें मुफलिसी में भारत में संघर्ष करना पड़ा और इसी संघर्ष तथा त्रासदी ने जिन्हें उन्हें एक एक महान पत्रकार बनाया. किसी भी प्रोफेशन की शुरुआत अगर करना हो तो उसकी जड़ों से शुरुआत करनी चाहिए उसके नींव से शुरुआत करनी चाहिए. हम इतिहास में देखते हैं कि जो भी व्यक्ति जिस विधा में पारंगत है वह कहीं ना कहीं उसे विधा के प्रारंभिक जड़ों से ही जुड़ा हुआ होता.कुलदीप नैयर जिसे आज भारत और दुनिया एक नैतिक पत्रकार के रूप में जानती है और यही कारण है कि आज पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पत्रकारों को उनके नाम अवार्ड भी प्रदान किया जाता है जिसे 'कुलदीप नैयर पत्रकारिता सम्मान' से हम सब जानते है. जिसकी सबसे बड़ी वजह ये है कि उन्होंने भी अपनी पत्रकारता की शुरुआत एक हाकर के रूप में आरंभ की थी.

विभाजन के बाद जब कुलदीप नैयर भारत में दर-दर भटक रहे थे और भूखे थे तब पिपुल एज नामक साप्ताहिक बेच कर उन्होंने गुजारा किया था.कुलदीप नैयर बताते हैं कि उन्होंने अपनी पत्रकारता की शुरुआत एक हाकर के रूप में की थी. एक दिन पत्र बेचते हुए उन्होंने अंजाम के संपादक मलिक मोहम्मद यासीन से काम के बारे में बात किया तो उन्होंने पूछा कितने पढ़े हो तब उन्होंने बताया कि मैं बीए पास हूं. और उर्दू अच्छी तरह आती है. मोहम्मद यासीन ने

फौरन उन्हें अपने समाचार पत्र अंजाम में काम करने के लिए रख लिया. तो इस प्रकार कुलदीप नैयर के पत्रकारिता का आगाज विभाजन की त्रासदियों के बीच होता है.

अच्छी शिक्षा हासिल होने के कारण कुलदीप नायर को पंजाब मेंबतौर संयुक्त संपादक का दर्जा प्राप्त हुआ था.शायद इसके पीछे की सबसे बड़ी वजह जो थी वह उनके अच्छे परिवार से संबंध और अच्छी शिक्षा का होना था. जिसे कुलदीप नैयर महज एक सहयोग मानते हैं.कुलदीप जी अपनी आत्मकथाओं और अन्य साक्षात्कारों के माध्यम से यह बार-बार कहते हुए नजर आते हैं कि वह कभी पत्रकार नहीं बनना चाहते थे परंतु नियति ने उनके लिए यही तय किया था.स्वतंत्रता काल के दौरान आपको बहुत से ऐसे नेता और लेखक मिलेंगे जो वकालत की डिग्री में शौक रखते थे. कुलदीप ने भी वकालत की डिग्री हासिल की थी. इसके बाद उन्होंने दर्शनशास्त्र में पीएचडी भी पूरा किया. परंतु स्थिति और संजोग ने उन्हें एक पत्रकार के रूप में ही चुना. क्योंकि भारतीय इतिहास एक ऐसे व्यक्ति को चुन रही थी जो भारत के विभाजन से लेकर के उसके 7 दशक तक की राजनीतिक उथल-पुथल और विकास का इतिहास लिख सके. कुलदीप नैयर भारतीय पत्रकारों में एक ऐसे पत्रकार हैं जिन्होंने महात्मा गांधी से लेकर के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक को अपने सामने देखा और उन पर लेख लिखें, इंटरव्यू किया और उनकी राजनीतिक प्रक्रिया को घटते हुए पाया. पत्रकारिता की हनक किसे कहते हैं इसका सबसे बड़ा उदाहरण कुलदीप नाहर के एक लेख से आप समझ सकते हैं.

बात उसे समय की है जब देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू का निधन हो चुका था. पूरा देश शोक में था. भारतीय राजनीति में एक शून्य तहसील पैदा हो गई थी. जाहिर ऐसे वक्त पर राजनीतिक हलचल बहुत तेज हो जाती है.

उस समय मोरारजी देसाई कांग्रेस पार्टी के एक ताकतवर नेता के तौर पर जाने जाते थे. उनकी महत्वाकांक्षा साफ-साफ देखी जाती थी रही थी. वह अपना माहौल बनाने में जुटे हुए थे. क्योंकि कुलदीप नायर लाल बहादुर शास्त्री के साथ काम कर चुके थे इसलिए वे उनकी नैतिकता और सादगी के बहुत कायल थे. पंडित नेहरू जी की अंत्येष्टि में शामिल होने के बाद उन्होंने देखा कि मोरारजी देसाई अपने प्रधानमंत्री बनने की दावेदारी को मजबूत करने में जुटे हुए थे. कुलदीप नैयर भी उनके घर पहुंचे यह जानने के लिए की आखिर स्थिति क्या है. उन्होंने पाया कि मोरारजी देसाई के पुत्र कांति देसाई कांग्रेस सांसदों की एक लिस्ट बना चुके थे. कुलदीप नैयर स्थिति को साफ करने के लिए तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष कामराज के पास पहुंचे और उन्होंने जानना चाहा कि आखिर क्या मोरारजी देसाई अगले प्रधानमंत्री बनने वाले हैं. पर कामराज ने कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया. स्थिति साफ थी मोरारजी देसाई भारत के दूसरे प्रधानमंत्री बनने के दावेदार थे. राजनीतिक गलियारों में हुगबुगाहत थी तो बस इतनी की शास्त्री भी हो सकते है पर इसकी दावेदारी पेश करें कौन ? परंतु उनके व्यवहार से बिल्कुल या स्पष्ट नहीं था कि वह कभी भी इस तरह का कोई कार्य करने वाले हैं.

कुलदीप ने लाल बहादुर शास्त्री से मुलाकात करना इस विषय में जरूरी समझा. वे लाल बहादुर शास्त्री के पास पहुंचे. उन्होंने लाल बहादुर से पूछा कि प्रधानमंत्री बनने के विषय में आपका क्या ख्याल है. लाल बहादुर का स्पष्ट जवाब था की जिसके साथ सर्व समिति होगी वहीं प्रधानमंत्री होगा. उनका जवाब मोरारजी देसाई के प्रति कांग्रेस सर्वासममति के संबंध में था . उन्होंने फिर भी कहा कि बेहतर होता कि कमेटी में इसका चुनाव हो जाता. उनकी पहली पसंद जयप्रकाश नारायण और दूसरी पसंद इंदिरा थी. कुलदीप समझ नहीं पा रहे थे कि उन्हें क्या करना चाहिए. अगले दिन उन्होंने इंडियन एक्सप्रेस सही अन्य अखबारों में अपना एक आर्टिकल प्रकाशित करवाया.

जो इस प्रकार था-

प्रधानमंत्री के पद के लिए सबसे पहले भूतपूर्व वित्त मंत्री श्री मोरारजी देसाई ने अपनी दावेदारी का ऐलान कर दिया है. माना जाता है कि उन्होंने अपने सहयोगियों से कहा है कि वे इस पद के उम्मीदवार है ऐसा समझा जाता है कि उन्होंने कहा है कि चुनाव जरूरी है और वह मुकाबला से पीछे नहीं हटेंगे. बिना विभाग वाले मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को एक और उम्मीदवार माना जा रहा है हालांकि वह खुद कुछ नहीं कह रहा है उनके निकट सूत्रों का कहना है कि वह मुकाबले को टालने की हर संभव कोशिश करेंगे.

इस लेख से राजनीतिक जगत में भूचाल से आ गया. कुलदीप नैयर अपनी किताब एक जिंदगी काफी नहीं में इसका बहुत बेहतर तरीके से जिक्र करते हैं. उन्होंने बताया है कि उन्हें यकीन नहीं था कि इस लेख का देश पर इतना बड़ा प्रभाव पड़ेगा. अगले दिन कांग्रेस के अध्यक्ष कामराज जी उनसे मिले और उन्होंने इस लेख के लिए उनका धन्यवाद दिया. कुलदीप समझ नहीं पा रहे थे कि आखिर इस लेख में ऐसा क्या है.

उनके काल में पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य जनता और सरकार के बीच संवाद को बनाए रखना था । समाचार पत्रों ने लोकतांत्रिक विमर्श का माध्यम बनकर शासन को उत्तरदायी बनाए रखने का कार्य किया । 1950 और 1960 के दशक में पत्रकारिता ने भारत की योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था, पंचवर्षीय योजनाओं, औद्योगिकीकरण और भूमि सुधार जैसे विषयों पर व्यापक विमर्श प्रस्तुत कर रहा था । यह वह समय था जब नेहरूवादी समाजवाद का प्रभाव देश के राजनीतिक और बौद्धिक जीवन पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। प्रेस ने इन विचारों को न केवल प्रचारित किया बल्कि उनकी आलोचनात्मक समीक्षा भी की ।

स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक वर्षों में प्रेस और सरकार के संबंध अपेक्षाकृत मधुर रहे। परंतु 1950 के दशक के उत्तरार्ध में जैसे-जैसे राजनीतिक दलों और सरकार की आलोचना करने वाली पत्रकारिता विकसित होने लगी, वैसे-वैसे सत्ता और प्रेस के बीच तनाव उभरने लगा। 1951 के *प्रेस (आपत्तिजनक विषयों) अधिनियम* और बाद के कुछ सरकारी आदेशों ने प्रेस की स्वतंत्रता पर सीमाएँ लगाने का प्रयास किया । हालांकि, भारतीय प्रेस परिषद जैसी संस्थाओं ने इन प्रयासों का विरोध किया और प्रेस की स्वायत्तता की रक्षा की । 1962 के चीन युद्ध और 1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान

प्रेस ने राष्ट्र की एकता को बनाए रखने और जनता का मनोबल ऊँचा रखने में भूमिका निभाई। इस समय समाचार माध्यमों ने राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ किया, लेकिन साथ ही प्रेस की स्वतंत्रता पर कुछ हद तक नियंत्रण भी देखा गया। युद्धकालीन सेंसरशिप ने पत्रकारों को यह सिखाया कि संकट की घड़ी में राष्ट्रहित और सत्य के बीच संतुलन कैसे रखा जाए।

1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के समय प्रेस ने जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अखबारों ने न केवल युद्ध की घटनाओं का निष्पक्ष वर्णन किया बल्कि मानवीय संकट और शरणार्थियों की स्थिति पर भी प्रकाश डाला । यह वह समय था जब भारतीय प्रेस ने अपनी मानवीय संवेदना का परिचय दिया और अंतरराष्ट्रीय समुदाय के समक्ष भारत के दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया।

निष्कर्ष-

1975 में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल ने भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ लाया। आपातकाल के दौरान प्रेस की स्वतंत्रता को गंभीर रूप से कुचल दिया गया। सभी समाचार पत्रों पर सेंसरशिप लागू की गई और सरकारी एजेंसियों की अनुमति के बिना कुछ भी प्रकाशित करना अपराध माना गया। पत्रकारों को गिरफ्तार किया गया, संपादकीय पृष्ठों को खाली छोड़ने के लिए मजबूर किया गया, और कुछ अखबारों ने आत्म-सेंसरशिप अपना ली। इस समय केवल कुछ ही समाचार पत्र जैसे *इंडियन एक्सप्रेस* और *द स्टेट्समैन* ने शासन की नीतियों का विरोध किया और स्वतंत्रता की आवाज़ उठाई।आपातकाल भारतीय पत्रकारिता के लिए परीक्षा का समय था इसने यह सिद्ध कर दिया कि प्रेस की स्वतंत्रता केवल संवैधानिक अधिकार नहीं, बल्कि लोकतंत्र का नैतिक आधार भी है । 1977 में जब आपातकाल समाप्त हुआ, तो प्रेस ने आत्ममंथन किया और अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित किया। पत्रकारिता अब केवल सूचना देने का माध्यम नहीं रही, बल्कि सत्ता की निगरानी और जनता के प्रति जवाबदेही का प्रतीक बन गई।

References:

[1] Kuldip Nayar, *Between the Lines*, Allied Publishers, 1983.

[1] Kuldip Nayar, *Between the Lines*, Allied Publishers, 1983.

[1] नैयर,के.(2020)एक जिन्दगी काफी नही (अनुवाद युगांक धीर),राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन ,दिल्ली-पृष्ठ-15

[1] . नैयर,के.(2020)एक जिन्दगी काफी नही (अनुवाद युगांक धीर),राजकमल पेपरबैक्स प्रकाशन ,दिल्ली-पृष्ठ-15

[1] .नैयर ,के (2024)इमरजेंसी की इनसाइड स्टोरी ,प्रभात प्रकाशन दिल्ली,पृष्ठ-60

[1] .नैयर ,के (2024)इमरजेंसी की इनसाइड स्टोरी ,प्रभात प्रकाशन दिल्ली,पृष्ठ-60

[1] . .नैयर ,के (2024)इमरजेंसी की इनसाइड स्टोरी ,प्रभात प्रकाशन दिल्ली,पृष्ठ-152